International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-3 May-June- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

"माध्यमिक स्तर के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन।"

कमला
पी–एच.डी. (शोधार्थी)

डॉ. विनोद भाम्बू
शोध निर्देशिका

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में राजस्थान के सीकर जिले के फतेहपुर तहसील के माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। आँकड़ों के संकलन हेतु समायोजन अनुसूचि, डॉ. पैनी जैन के द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन परिसूचि का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलित, क्रांतिक अनुपात सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव विकास व उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। जन्म के समय बालक पशुवत आचरण करता है, उस समय वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा उसकी इन प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके परिपक्वता प्रदान करती है शिक्षा बालकों में रचनात्मक शक्ति का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा वह केवल अपने वातावरण को अनुकूलन करने में ही समर्थ नहीं होता, वरन वातावरण व प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता हैं शिक्षा ही मानव को असत्य से सत्य की ओर अंधकार से प्रकाश की ओर अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने के लिए प्रेरित करती हैं वास्तव में शिक्षा वह प्रक्रिया जो व्यक्ति को अपनी परिस्थिति व वातावरण के मध्य अनुकूलन करना सिखाती है। शिक्षा द्वारा मानव को ज्ञानवान, कला कौशल युक्त और सभ्य बनाया जाता है। वह माता के समान पालन–पोषण करती है और पिता के समान उचित मार्गदर्शन करती है। शिक्षा ग्रहण करने का मुख्य स्त्रोत विद्यालय है, जहां विद्यार्थी समायोजन करने की प्रक्रिया को सिखता है।

समायोजन हमारे जीवन की एक आवश्यक प्रक्रिया है। दैनिक जीवन में अपनी आवश्कताओं की पूर्ति मनुष्य समायोजन की प्रक्रिया द्वारा करता है। मनुष्य अपनी सामन्जस्य की क्षमता में अन्य प्राणियां की अपेक्षा बजोड़ है। घर में रहने वाले स्त्री–पुरूष हो या कक्षा की चार दिवार में शिक्षक, विद्यार्थी हो। सभी वर्गों के व्यक्ति सामंजस्य अथवा समायोजन की प्रक्रिया से होकर गुजरते है तथा स्वयं को समंजित कर अपने कार्य क्षेत्र में कड़वाहट की जगह मिठास तनाव की बजाय तालमेल एवं मानसिक दोष एवं अपनी जिन्दगी को बोझ बनाने की अपेक्षा उसे एक आकर्षक चुनौति के रूप में स्वीकार कर जीने की कला को सीख लेते है।

सुखे दुखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाययौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

अर्थात सुख–दुःख को समान समझकर तथा लाभ हानि, राग–द्वेष, जय–पराजय को समान रूप जानकर जीवनरूपी युद्ध अर्थात शारीरिक मानसिक विकारों का निवारण करने के लिए तत्पर रहना चाहिये। ऐसा करने से तुम शान्ति को भी प्राप्त कर सकते हो। इस संदर्भ में समयोजन की प्रक्रिया के लिए व्यवहारवादियों तथा मनोविश्लेषणवादियों ने भी संकेत दिया है कि वस्तुतः व्यक्ति समुचित निर्देशन तथा गत्यात्मक वातावरण के द्वारा स्वयं को देश काल परिस्थिति के अनुसार समायोजत कर लते है।

समायोजन वह पथ है जिस पर चलते हुए हम ऐसे वातावरण में जो कभी सहायक है, तो कभी जटिल है और हानिकारक है, अपनी आवष्यकताओं की संतुष्टि करते हैं। हमारे समायोजित होने की प्रक्रिया केवल तभी घटित होती है जब हमारी कुछ आवष्यकताएं हो जब हम उन पर आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक मार्ग चुनें और जब पर्यावरण जिसमें कि हमें संतुष्टियाँ ढूँढ़नी है, हमारे प्रति तटस्थ या विरोधी बना रहे।

प्रत्येक बालक का वर्तमान और भविष्य का जीवन सुखी ओर आनन्दमयी तभी हो सकता है जब उसका व्यवहार समायोजित प्रकार का हो।

समायोजन प्रक्रिया में व्यक्ति तथा वातावरण दोनों प्रभावित होते है। व्यक्ति समायोजन करने के लिए अपने बाह्य वातावरण के साथ निरनतर अन्तः क्रिया करता है। समायोजन करने के लिए कई बार वह अपने आपको बदलता है तो कई बार वह वातावरण को बदलने का प्रयास करता है। ऐसे भी उदाहरण मिलते है जबकि व्यक्ति ने सामंजस्य की प्रक्रिया में स्वयं को तथा वातावरण दोनों को परिवर्तित किया है।

मूल शब्द – समायोजन, समाजीकरण,विद्यार्थी।

समस्या कथन

"माध्यमिक स्तर के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन।"

अध्ययन का उद्देश्य :–

- माध्यमिक स्तर के सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

- माध्यमिक स्तर के सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन**"माध्यमिक स्तर के सरकारी स्कूल के शहरी व ग्रामीणविद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन।"** में अनुसंधान की विधि के रूप में **सर्वेक्षण विधि** को अपनाया गया है।

न्यादर्शः–

सारणी				
विद्यार्थी (100)	शहरी (50)		ग्रामीण (50)	
	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
	25	25	25	25

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

- मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रांतिक अनुपात।

प्रयुक्त उपकरण :–

- समायोजन अनुसूचि, डॉ. पैनी जैन

अध्ययन का परिसीमन :–

- यह माध्यमिक स्तर के सरकारी स्कूल के (विद्यार्थियों) पर किया गया है।

- राजस्थान के सीकर जिले के फतेहपुर तहसील को अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।
- इस अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के विद्यालय को सम्मिलित किया है।
- शोध में केवल 100 न्यादर्श सम्मिलित किये गये जिसमें 50 शहरी व 50 ग्रामीण विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1. सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना

तालिका संख्या – 1

अध्ययनित न्यादर्ष	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (T.Value)	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
शहरी क्षेत्र	25	8.60	1.44	0.32	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
ग्रामीण क्षेत्र	25	8.48	1.19			

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 में सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्षित किया गया। इनके मध्यमान क्रमषः 8.60 एवं 8.48 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमषः 1.44 एवं 1.19 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर टी–मूल्य (T.Value)0.32 प्राप्त हुआ है। 48(df) स्वतंत्रता के अंष पर 0. 05 सार्थकता स्तर का मान टी–मूल्य की तालिका में 2.01 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का मान 2.68 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर कम है, अतः यह निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी विद्यार्थियों का समायोजन ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर का है।

2 : सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों के समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना

तालिका संख्या –2

अध्ययनित न्यादर्श	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	कांतिक अनुपात (T.Value)	सार्थकता के स्तर	
					.05स्तर	.01स्तर
शहरी छात्रों	25	8.40	1.11	0.13	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
ग्रामीण छात्रों	25	8.36	1.03			

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 में सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्षित किया गया। इनके मध्यमान क्रमषः 8.40 एवं 8.36 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 1.11 एवं 1.03 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर टी–मूल्य (T.Value) 0.13 प्राप्त हुआ है। 48(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर का मान टी–मूल्य की तालिका में 2.01 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का मान 2.68 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर कम है, अतः यह निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी छात्रों का समायोजन ग्रामीण छात्रो की अपेक्षा उच्च स्तर का ळें

3. सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना

तालिका संख्या – 3

अध्ययनित न्यादर्ष	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	कांतिक अनुपात ¼T.Value)	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
शहरी छात्राएं	25	8.28	1.67	0.84	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
ग्रामीण छात्राएं	25	8.60	0.95			

उपर्युक्त तालिका संख्या 3 में सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्षित किया गया। इनके मध्यमान क्रमषः 8.28 एवं 8.60 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमषः 1.67 एवं 0.95 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर टी–मूल्य (T.Value)0.84 प्राप्त हुआ है। 48(df) स्वतंत्रता के अंष पर 0.05 सार्थकता स्तर का मान टी–मूल्य की तालिका में 2.01 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का मान 2.68 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर कम है, अतः यह निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी छात्राओं का समायोजन ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा निम्न स्तर का है।

4.सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्र व छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना

तालिका संख्या –4

अध्ययनित न्यादर्श	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	कांतिक अनुपात (T.Value)	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
शहरीछात्र	25	8.40	1.18	0.57	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
ग्रामीण छात्राएं	25	8.60	1.32			

उपर्युक्त तालिका संख्या 4 में सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 8.40 एवं 8.60 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 1.18 एवं 1.32 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर टी–मूल्य (T.Value) 0.57 प्राप्त हुआ है। 48(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर का मान टी–मूल्य की तालिका में 2.01 तथा 0.01 सार्थकता स्तर का मान 2.68 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान दोनों सार्थकता स्तरों पर कम है, अतः यह निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी छात्रों का समायोजन ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा निम्न स्तर का है।

निष्कर्ष :–

- सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के ''समायोजन'' में दोनों का सार्थकता स्तर .05 एवं .01 पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया और निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई।
- सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों के ''समायोजन'' में दोनों का सार्थकता स्तर .05 एवं .01 पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया और निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई।
- सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्राओं के ''समायोजन'' में दोनों का सार्थकता स्तर .05, .01 पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया और निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई।
- सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्र व छात्राओं के ''समायोजन'' में दोनों का सार्थकता स्तर .05 एवं .01 पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया और निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गई।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- अस्थाना, विपिन (1994) : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।
- सिंह, बलवान (2018) : चेतना पत्रिका, धौलपुर एज्यूकेशन एवं सोसियल डवलपमेन्ट, (माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन)।
- भार्गव, महेश (1993) : आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा भार्गव बुक हाऊस।
- भार्गव, उषा (1993) : किशोर मनोविज्ञान, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- भटनागर, ए.बी.य,भटनागर मीनाक्षी (2004) : शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान, मेरठ आर.लाल. बुक डिपो।
- भटनागर, आर.पी. (2003) : शिक्षा अनुसंधान,मेरठ इन्टरनेशनल पब्लिशिग हाऊस।
- भटनागर, सुरेश (1993) : ''अधिगम एवं विकास के मनो आधार'' मेरठ इण्टरनेशनल पब्लिशंग हाऊस।
- भटनागर, सुरेश (1997) : शिक्षा मनोविज्ञान,मेरठ लॉयल बुक डिपो।
- चौहान, आर.एस (2001) : विकास के मनोवैज्ञानिक आधार, आगरा साहित्य प्रकाशन।

- चौहान, एस.एस.(1998) : उच्च षिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाऊस।
- गुप्ता, एम. एल, शर्मा,डी.डी. (1997) : भारतीय समाज, आगरा साहित्य भवन पब्लिकेशन्स।
- गुप्ता, नत्थूलाल, 'अग्रहरि' (2001) : मूल्य परक शिक्षा और समाज, नई दिल्ली नमन प्रकाशन।

शोध पत्रिकाएं

- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका : जुलाई – दिसम्बर (2001) :भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, लखनऊ।
- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका : जुलाई–दिसम्बर (2007): भारतीय शिक्षा शोध संस्थान लखनऊ।
- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका : जनवरी–जून (2008) : भारतीय शिक्षा शोध संस्थान लखनऊ।
- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका : जनवरी–जून, (2009) : भारतीय शिक्षा शोध संस्थान लखनऊ।
- युग निर्माण योजना, (2007) : गायत्री तपोभूमि, मथुरा।